ISSN 0974-8857

# TULSĪ PRAJÑĀ

(An UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year-45 • Vol. 177-178 • Issue: January-June, 2018

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
A University dedicated to Oriental Studies & Human Values
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

# Tulsī Prajñā

## Contents

### Āgama

Ācārya Mahāprajña 5

### Articles

Preksha Meditation: A Prompt Way of Improving Emotional Intelligence 27
*Prof. Samani Riju Pragya*
*Dr. Samani Shreyas Pragya*

Interpretation- A Hermeneutic Approach to Decipher the Meaning of Symbol 39
*Dr Sadhvi Rajul Prabha (Samani Ramaniya Pragya)*

चेतना की स्थितियों का दार्शनिक विश्लेषण एवं सर्वेक्षण 53
*डॉ सुशिम दुबे*

संस्कृतसन्धानसाहित्यस्य विकासे जैनाचार्याणाम् अवदानम् 63
*डॉ. श्रेयांसकुमारो जैनः*

अशोक के अभिलेखों में वर्णित अहिंसा तत्त्व का विश्लेषण 71
*डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा*

'संयोगितास्वयंवरं' नाटके प्रतिफलित–समाजव्यवस्थायाः अध्ययनम् 85
*श्रीचेता मैत्र*

Āgams: The Main Source of Jain Knowledge 95
*Samani Sanmati Pragya*

*Tulsī Prajñā*
45 (177-178)
ISSN : 0974-8857

# अशोक के अभिलेखों में वर्णित अहिंसा तत्त्व का विश्लेषण

**डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा**


## सारांशिका

अभिलेख भारतीय इतिहास के अडिग स्तम्भ है। भारत के विभिन्न कालों के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन का बिम्ब, इन अभिलेखों में ही सबसे अधिक यथार्थ रूप में दृष्टिगत होता है। अभिलेखों के सन्दर्भ में जहां कहीं भी चर्चा होती है, तो स्वतः ही सम्राट् अशोक का नाम स्मृति में आ जाता है। कलिंग के युद्ध में अशोक ने लाखों जीवों का संहार किया। अनेक जीवों को मृत देखकर स्वयं अशोक का दिल दहल उठा। उसने उसी दिन से रण –युद्ध का त्याग कर धर्म युद्ध करने का संकल्प स्वीकार किया। सर्वप्राणियों के हित और सुख के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाया। राज्य में शान्ति एवं अहिंसा को स्थापित करने के लिए विविध कार्य किए गए, जिनकी झलक हमें अशोक के शिलालेखों से प्राप्त होती है।

ईसा पूर्व युगीन अभिलेखों में सर्वाधिक अभिलेख सम्राट् अशोक के द्वारा लिखवाये गये हैं। ये अभिलेख ई.पू. 261 में राज्याभिषेक के 12 वर्ष पश्चात् वृहत्तर भारत में उत्कीर्ण कराये गये हैं। इनकी विशेषता यह है कि इनके द्वारा सम्राट् अशोक ने प्रजा में अहिंसा के प्रति आस्था उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इन अभिलेखों में क्षमा–नीति, व्यवहार–समता और दण्ड–समता की आदर्श नीतियों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं।



## मुख्य शब्द

अशोक, अहिंसा, क्षमानीति, आदर्शनीति।


---

**डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा,** सह–आचार्या, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ